मछुआरों के लिये आपदा चेतावनी प्रेषित्र

प्रिलिम्स के लिये:

समुद्री बचाव समन्वय केंद्र (MRCC), भारतीय तटरक्षक बल (ICG), भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO), संभावित मछली पकड़ने के क्षेत्र (PFZ)

मेन्स के लिये:

मछुआरों के लिये आपदा चेतावनी प्रेषित्र, आपदा और आपदा प्रबंधन

स्रोत: इकॉनोमिक टाइम्स

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (Indian Space Research Organisation- ISRO) ने **दूसरी पीढ़ी का आपदा चेतावनी प्रेषित्र (Second-Generation Distress Alert Transmitter, DAT-SG)** विकसित किया है जो **समुद्र में मछुआरों के लिये** मछली पकड़ने की नौकाओं से **आपातकालीन संदेश भेजने** के लिये एक स्वदेशी तकनीकी समाधान है।

- आपदा की स्थिति का सामना करने पर मछुआरे आपातकालीन संदेश भेजने के लिये DAT का उपयोग कर सकते हैं। इन संदेशों में आम तौर पर मछली पकड़ने की नौका की पहचान, स्थान तथा आपातकाल की प्रकृति से संबंधित जानकारी होती है।

आपदा चेतावनी प्रेषित्र (DAT) क्या है?

- **परिचय:**
  - DAT के प्रथम संस्करण का परिचालन वर्ष 2010 से शुरू है जिसके उपयोग से संदेश एक संचार उपग्रह के माध्यम से भेजे जाते हैं तथा एक **केंद्रीय नियंत्रण स्टेशन (INMCC: भारतीय मिशन नियंत्रण केंद्र)** में प्राप्त होते हैं जहाँ मछली पकड़ने की नौका की पहचान व स्थान के लिये चेतावनी संकेतों को डिकोड किया जाता है।
  - प्राप्त जानकारी को फिर **भारतीय तटरक्षक बल (Indian Coast Guard- ICG)** के तहत **समुद्री बचाव समन्वय केंद्रों (Maritime Rescue Coordination Centre- MRCC)** को अग्रेषित किया जाता है।
  - इस जानकारी का उपयोग करते हुए, **MRCC** संकट में मछुआरों को बचाने के लिये **खोज तथा बचाव अभियान शुरू करने के लिये समन्वय करता है।**
    - वर्तमान में **20,000 से अधिक DAT का उपयोग** किया जा रहा है।

दूसरी पीढ़ी का आपदा चेतावनी प्रेषित्र (DAT-SG) क्या है?

- **DAT-SG:**
  - दूसरी पीढ़ी का आपदा चेतावनी प्रेषित्र (DAT-SG) मूल **आपदा चेतावनी प्रेषित्र (Distress Alert Transmitter- DAT)** पर आधारित है तथा समुद्री सुरक्षा एवं संचार को बढ़ाने के लिये इसमें उन्नत क्षमताओं व सुविधाओं को शामिल किया गया है।
  - **DAT-SG** में समुद्र से संकट की चेतावनी सक्रिय करने वाले मछुआरों को वापस सूचना की पुष्टि भेजने की सुविधा है।
  - ISRO द्वारा DAT-SG का विकास किया गया है जो कि **NavIC (भारतीय नक्षत्र में नौवहन) रिसीवर मॉड्यूल** पर आधारित एक **अल्ट्रा हाई फ्रीक्वेंसी (UHF)** प्रेषित्र/ट्रांसमीटर है।
    - यह NavIC रिसीवर मॉड्यूल स्थिति निर्धारण के साथ-साथ प्रसारण संदेश पुष्टि का समर्थन करता है जिसे NavIC मैसेजिंग सेवा कहा जाता है।
- **विशेषताएँ:**
  - **ब्लूटूथ इंटरफेस:** DAT-SG को ब्लूटूथ इंटरफेस का उपयोग करके मोबाइल फोन से जोड़ा जा सकता है। इससे मछुआरों को अपने **मोबाइल उपकरणों पर संदेश प्राप्त करने की सुविधा** मिलती है। इसके अतिरिक्त, मोबाइल फोन पर एक ऐप का उपयोग मूल भाषा में संदेशों को पढ़ने के लिये किया जा सकता है, जिससे पहुँच बढ़ जाती है।

- **मोबाइल फोन के साथ एकीकरण:** DAT-SG को मोबाइल फोन के साथ एकीकृत किया जा सकता है, जो संचार के लिये एक सुविधाजनक और व्यापक रूप से उपयोग किया जाने वाला मंच प्रदान करता है।
- **वेब-आधारित नेटवर्क प्रबंधन प्रणाली (SAGARMITRA):** केंद्रीय नियंत्रण केंद्र (INMCC) **"सागरमित्र"** नामक वेब-आधारित नेटवर्क प्रबंधन प्रणाली का उपयोग करता है।
    - यह प्रणाली पंजीकृत **DAT-SG** का डेटाबेस बनाए रखती है और **संकट में नौकाओं के बारे में वास्तविक समय की जानकारी तक पहुँचने में समुद्री बचाव समन्वय केंद्रों (Maritime Rescue Coordination Centres - MRCCs)** की सहायता करती है। यह सुविधा भारतीय तटरक्षक बल को तुरंत खोज एवं बचाव अभियान चलाने में मदद करती है।
- **आमने सामने का संचार:** DAT-SG नियंत्रण **केंद्र से संदेश प्राप्त करने की क्षमता से सुसज्जित** है। यह केंद्रीय नियंत्रण स्टेशन को खराब मौसम, चक्रवात, सुनामी या अन्य आपात स्थितियों जैसी घटनाओं के मामले में **मछुआरों को अग्रिम चेतावनी संदेश भेजने में सक्षम बनाता** है।
- **संभावित मत्स्य पालन क्षेत्र:** DAT-SG नियमित अंतराल पर **समुद्र में मछुआरों को संभावित मछली पकड़ने के क्षेत्रों के बारे में जानकारी प्रसारित** कर सकता है। यह सुविधा मछुआरों को उच्च किस्म की मछलियाँ पकड़ने की अधिक संभावना वाले क्षेत्रों का पता लगाने में सहायता करती है, जिससे मछली पकड़ने के संचालन में दक्षता बढ़ती है और समय तथा ईंधन की बचत होती है।
- **ऑपरेशनल 24/7: DAT-SG की सेवाएँ 24x7 आधार पर प्रारंभ की गई हैं, जिससे संकट में फँसे मछुआरों को निरंतर सहायता सुनिश्चित की जा रही है।**

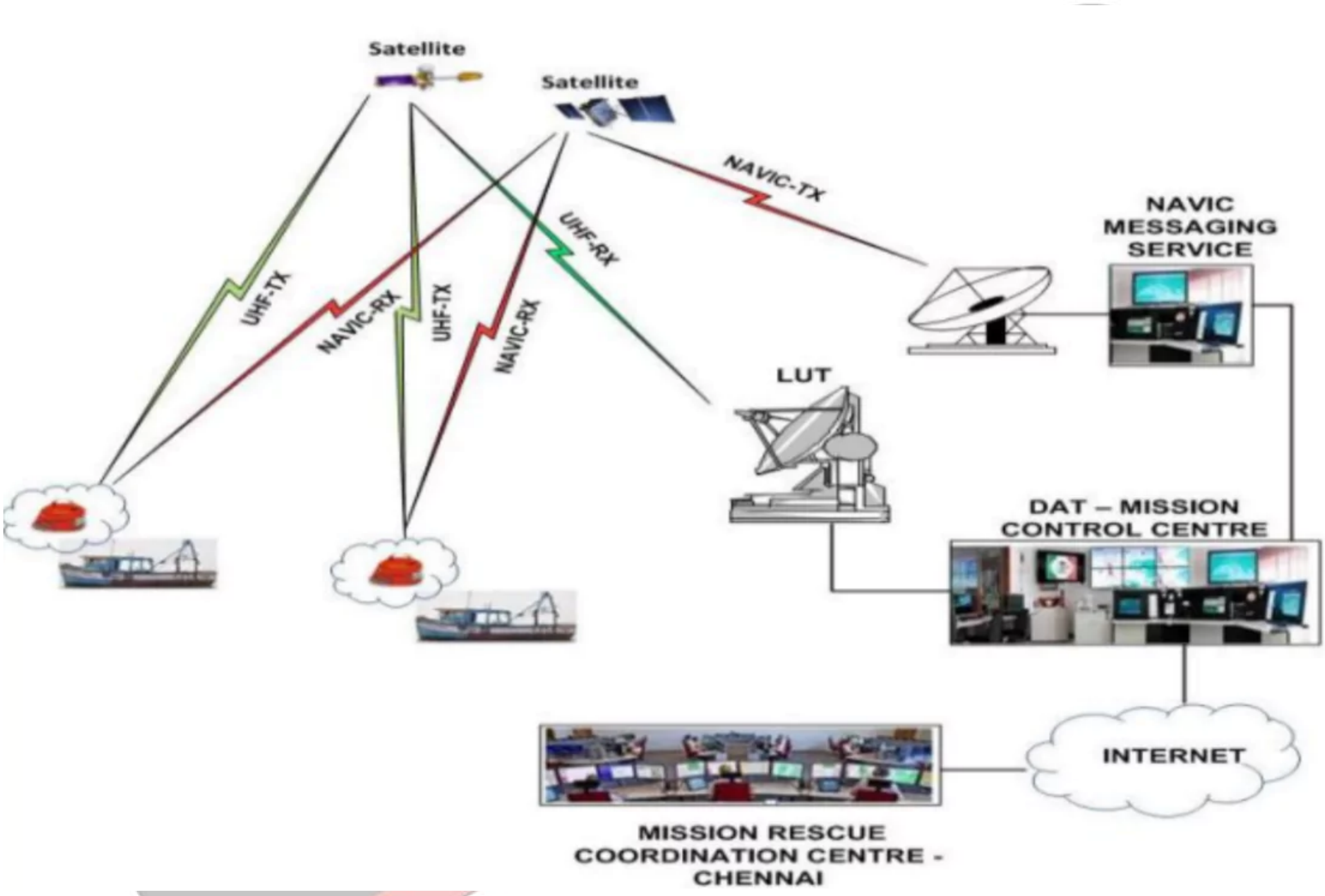

//

NavIC क्या है?

- **परिचय:**
    - NavIC या **भारतीय क्षेत्रीय नेविगेशन सैटेलाइट सिस्टम (IRNSS)** को 7 उपग्रहों के समूह और 24×7 संचालित ग्राउंड स्टेशनों के नेटवर्क के साथ डिज़ाइन किया गया है।
        - इसमें **कुल आठ उपग्रह हैं लेकिन अभी केवल सात ही सक्रिय** हैं।
        - **भूस्थैतिक कक्षा में तीन उपग्रह तथा भूतुल्यकालिक कक्षा में चार उपग्रह हैं।**
    - **तारामंडल का पहला उपग्रह (IRNSS-1A)** 1 जुलाई, 2013 को लॉन्च किया गया था और आठवाँ उपग्रह IRNSS-1I अप्रैल, 2018 में लॉन्च किया गया था।
        - तारामंडल के उपग्रह (IRNSS-1G) के सातवें प्रक्षेपण के साथ वर्ष 2016 में भारत के प्रधानमंत्री द्वारा IRNSS का नाम बदलकर NaVIC कर दिया गया।
    - इसे [अंतर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन (IMO)](#) **द्वारा वर्ष 2020 में हिंद महासागर क्षेत्र में संचालन के लिये वर्ल्ड-वाइड रेडियो**

नेविगशन सिस्टम (WWRNS) के एक भाग के रूप में मान्यता दी गई थी।

- **संभावित उपयोग:**
  - स्थलीय, हवाई और समुद्री नेविगशन;
  - आपदा प्रबंधन;
  - वाहन ट्रैकिंग और बेड़ा प्रबंधन (विशेष रूप से खनन और परिवहन क्षेत्र के लिये);
  - मोबाइल फोन के साथ एकीकरण;
  - सटीक समय (ATM और पावर ग्रिड के लिये);
  - मैपिंग और जियोडेटिक डेटा कैप्चर।

UPSC सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न. भारतीय क्षेत्रीय नौवहन उपग्रह प्रणाली (IRNSS) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये: (2018)

1. IRNSS के भूस्थिर में तीन उपग्रह और भू-समकालिक कक्षाओं में चार उपग्रह हैं।
2. IRNSS पूरे भारत को कवर करता है और लगभग 5500 वर्ग किमी.इसकी सीमाओं से परे है।
3. वर्ष 2019 के मध्य तक भारत के पास पूर्ण वैश्विक कवरेज के साथ अपना स्वयं का उपग्रह नेविगशन सिस्टम होगा।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 1 और 2
(c) केवल 2 और 3
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर: (a)

??????:

प्रश्न. भारतीय क्षेत्रीय नौवहन उपग्रह प्रणाली (IRNSS) की आवश्यकता क्यों है? यह नेविगशन में कैसे मदद करती है? (2018)

प्रश्न. अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत की उपलब्धियों पर चर्चा कीजिये। इस प्रौद्योगिकी का प्रयोग भारत के सामाजिक-आर्थिक विकास में किस प्रकार सहायक हुआ है? (2016)

19वाँ NAM शिखर सम्मेलन और भारत-युगांडा संबंध

प्रिलिम्स के लिये:

गुटनिरपेक्ष आंदोलन, NAM का 19वाँ शिखर सम्मेलन, दोहरा कराधान अपवंचन समझौता

मेन्स के लिये:

भारत-युगांडा संबंध, गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM), NAM के साथ चुनौतियाँ

स्रोत: द हिंदू

चर्चा में क्यों?

हाल ही में **कंपाला में** [गुटनिरपेक्ष आंदोलन](#) **(Non Aligned Movement-NAM)** के **19वें शिखर सम्मेलन की मेज़बानी** करने वाले युगांडा के राष्ट्रपति योवेरी मुसेवेनी ने 1970 के दशक में **ईदी अमीन द्वारा भारतीयों के निष्कासन पर खेद व्यक्त** किया।

- मैंने युगांडा में भारतीय प्रवासियों की उपलब्धियों की प्रशंसा की है और वैश्विक दक्षिण में भारत की भूमिका की सराहना की है।

गुटनिरपेक्ष आंदोलन के 19वें शिखर सम्मेलन की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?

- **NAM** का 19वाँ शिखर सम्मेलन **"साझा वैश्विक समृद्धि के लिये सहयोग को गहरा करना"** विषय पर कंपाला, युगांडा में आयोजित किया गया था।
  - **अज़रबैजान के बाद युगांडा ने वर्ष 2027 तक के लिये इसकी अध्यक्षता ग्रहण की है।**
- शिखर सम्मेलन ने **कंपाला घोषणा को अपनाया, जिसमें इज़रायली सैन्य आक्रामकता** की निंदा की गई और घिरे [गाज़ा पट्टी](#) में मानवीय सहायता की अनुमति देने के लिये [संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद](#) के प्रस्ताव को लागू करने का आह्वान किया गया।
- **NAM की स्थापना वर्ष 1961 में नव स्वतंत्र देशों के पाँच नेताओं–** यूगोस्लाविया के जोसिप ब्रोज़ टीटो, मिस्र के गमाल अब्देल नासिर, **भारत के जवाहरलाल नेहरू,** इंडोनेशिया के सुकर्णो और घाना के क्वामे नकरुमाह- की पहल के माध्यम से बेलग्रेड, यूगोस्लाविया में की गई थी।
  - इसका गठन [शीत युद्ध](#) के दौरान **उन राज्यों के एक संगठन के रूप में किया गया** था जो औपचारिक रूप से खुद को संयुक्त राज्य अमेरिका या सोवियत संघ के साथ जोड़ना नहीं चाहते थे बल्कि स्वतंत्र या तटस्थ रहना चाहते थे।
  - वर्तमान में **आंदोलन में 120 सदस्य देश, 17 पर्यवेक्षक देश और 10 पर्यवेक्षक** संगठन हैं।
  - **NAM के पास कोई स्थायी सचिवालय या औपचारिक संस्थापक चार्टर,** अधिनियम या संधि नहीं है।
  - यह **शिखर सम्मेलन आमतौर पर हर तीन साल में** होता है।

ईदी अमीन के शासनकाल में युगांडा में भारतीयों का क्या हुआ?

- अगस्त 1972 में, **युगांडा के तानाशाह ईदी अमीन** ने युगांडा में रहने और काम करने वाले भारतीयों तथा अन्य एशियाई लोगों को निष्कासित करने का आदेश दिया।
  - लगभग 80,000 भारतीयों को अपनी संपत्ति और व्यवसाय छोड़कर, 90 दिनों के भीतर देश छोड़ने के लिये मजबूर होना पड़ा।
- इस निष्कासन का **युगांडा की अर्थव्यवस्था पर विनाशकारी प्रभाव पड़ा** , जिसे कुशल श्रमिकों, उद्यमियों और निवेशकों की हानि का सामना करना पड़ा।

भारत-युगांडा संबंध कैसे रहे हैं?

- **राजनीतिक संबंध:**
  - भारत और युगांडा के बीच एक शताब्दी से अधिक पुराने ऐतिहासिक संबंध हैं। भारतीय पहली बार 20वीं सदी की शुरुआत में युगांडा आए थे।
    - **भारत के स्वतंत्रता संग्राम ने युगांडा के शुरुआती कार्यकर्त्ताओं को उपनिवेशवाद** से लड़ने के लिये प्रेरित किया और अंततः **युगांडा ने वर्ष 1962 में स्वतंत्रता** हासिल की।
  - **भारत ने वर्ष 1965 में युगांडा में अपनी राजनयिक उपस्थिति** स्थापित की। 1970 के दशक की शुरुआत में राष्ट्रपति अमीन के शासनकाल के दौरान, **लगभग 60,000 भारतीयों/पीआईओ को निष्कासित कर दिया** गया था। हालाँकि, वर्ष 1979 में अमीन को सत्ता से बेदखल करने के बाद, **युगांडा की सफल सरकारों ने निष्कासित भारतीयों को वापस लौटने और अपनी संपत्तियों तथा नागरिकता को पुनः प्राप्त** करने के लिये आमंत्रित किया।
- **भारतीय प्रवासी:**
  - भारतीय समुदाय युगांडा के साथ सबसे मज़बूत और सबसे टिकाऊ आर्थिक तथा सांस्कृतिक संबंध प्रस्तुत करता है।
  - बैंक ऑफ युगांडा और युगांडा राजस्व प्राधिकरण के आँकड़ों के अनुसार, **भारतीय नागरिक/पीआईओ, जो युगांडा की आबादी का 0.1% से कम हैं, युगांडा के प्रत्यक्ष करों में लगभग 70% का योगदान करते** हैं।
  - **'इंडिया डे', एक वार्षिक समारोह है**, जो भारतीय संस्कृति को प्रदर्शित करता है और हज़ारों आगंतुकों को आकर्षित करता है। यह आयोजन भारतीय और युगांडा समुदायों को एक साथ लाने का काम करता है।
- **रक्षा:**
  - भारत युगांडा के रक्षा कर्मियों के लिये प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित करता है।
- **वाणिज्यिक संबंध:**
  - युगांडा [अल्प विकसित देशों (Least Developed Countries- LDC)](#) के लिये **भारत की** [शुल्क मुक्त प्रशुल्क वरीयता (Duty Free Tariff Preference- DFTP)](#) **योजना** का लाभार्थी रहा है।
    - **युगांडा को भारतीय निर्यात** की प्रमुख वस्तुओं में भेषजीय उत्पाद, वाहन, प्लास्टिक, कागज़ व पेपरबोर्ड, कार्बनिक रसायन इत्यादि शामिल हैं।
    - **युगांडा से भारत में आयात** की जाने वाली प्रमुख वस्तुओं में सब्ज़ियाँ तथा कुछ जड़ें व कंद, कॉफी, चाय, मेट एवं मसाले और कोको व कोको उत्पादन हेतु विधि शामिल हैं।
    - भारत तथा युगांडा के बीच [दोहरा कराधान परिहार समझौता (Double Taxation Avoidance Agreement)](#) वर्ष 2004 से प्रभावी है।
      - DTAA दो अथवा दो से अधिक देशों के बीच हस्ताक्षरित एक कर संधि है। इसका मुख्य उद्देश्य **संबद्ध देशों में करदाता की एक ही आय पर दो बार कर लगाने से बचाना** है।
        - DTAA उन मामलों में कार्यान्वित होता है जहाँ करदाता एक देश में निवास करता है तथा दूसरे देश में आय

अर्जित करता है।

- **छात्रवृत्तियाँ और क्षमता निर्माण प्रशिक्षण कार्यक्रम:**
  - भारत सरकार युगांडावासियों को सरकारी तथा निजी क्षेत्र से छात्रवृत्ति एवं फेलोशिप प्रदान करती है ताकि वे भारत में स्नातक, स्नातकोत्तर तथा अनुसंधान पाठ्यक्रम करने में सक्षम हो सकें।

UPSC सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न. भारत के निम्नलिखित राष्ट्रपतियों में से कौन कुछ समय के लिये गुटनिरपेक्ष आंदोलन के महासचिव भी थे? (2009)

(a) डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन
(b) वराहगिरि वेंकटगिरि
(c) ज़ाकिर हुसैन
(d) डॉ. शंकर दयाल शर्मा

उत्तर: (c)

?????:

प्रश्न. 'उभरती हुई वैश्विक व्यवस्था में भारत द्वारा प्राप्त नव-भूमिका के कारण उत्पीड़ित एवं उपेक्षित राष्ट्रों के मुखिया के रूप में दीर्घकाल से संपोषित भारत की पहचान लुप्त हो गई है'। विस्तार से समझाइये। (2019)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/current-affairs-news-analysis-editorials/news-analysis/23-01-2024/print